Chap-8

अष्टम् अध्याय

उपसंहार

अष्टम् अध्याय

उपसंहार

पिछले अध्यायों में हिन्दी तथा गुजराती भ्रमरगीत काव्य के विभिन्न पक्षों पर यथासंभव विस्तृत विचार किया गया है ।

इसके प्रथम अध्याय में भ्रमरगीत के मूल स्रोत की चर्चा करते हुए कहा गया है कि भ्रमरगीत प्रसंग की उद्भावना भागवतकार की है । सम्पूर्ण कृष्ण-कथा में भ्रमरगीत एक ऐसा प्रसंग है जिसकी सृष्टि श्रीमद्भागवत पुराण में ही हुई है । दोनों भाषाओं के कवियों ने श्रीमद्भागवत पुराण को ही आधार मानकर भ्रमरगीतों की रचना की है । हिन्दी में सूरदास से लेकर श्यामसुन्दरदास दीक्षित तथा गुजराती में नरसिंह मेहता से लेकर दयाराम तक जितने भ्रमरगीतकार हुए हैं उन सबने इस प्रसंग की रचना में अपनी-अपनी प्रतिभा, कला एवं कल्पना का उन्मेष किया है । यहां हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओं के भ्रमरगीत काव्य के वैशिष्ट्य तथा उनकी सीमाओं का भी आलोचन कर लेना समीचीन होगा । साथ ही दोनों भाषाओं के भ्रमरगीतों में प्राप्त सम तथा विषम रेखाओं की भी मीमांसा कर लेना परम आवश्यक है ।

भ्रमरगीत काव्य जैसा कि अन्यत्र कहा जा चुका है विप्रलम्भ शृंगार के अंतर्गत अत्यन्त मार्मिकता लिये हुए है । विरह की जितनी व्यंजनाएं प्रस्तुत काव्य में हुई हैं उतनी सम्भवतया अन्यत्र नहीं । एक ही प्रसंग पर एक तथा अनेक कवियों की शताधिक रचनाओं के प्राप्त होने पर भी काव्य की नवीनता, मार्मिकता तथा प्रभविष्णुता में किंचित् मात्र न्यूनता नहीं आने पाई है । प्रतीत ऐसा होता है कि इस काव्य में क्षण-क्षण पर नवीनता आती जाती है । इसीलिए मध्यकाल से लेकर आज तक यह चर्चित व संरचित है । " यह विकास भ्रमरगीत प्रसंग के अक्षुण्ण आकर्षण का परिणाम है ।---------- पिछली पांच शताब्दियों से यह निरन्तर अजस्रधारा से प्रवाहित है । इसके अजस्र प्रवाह का कारण

इसकी भाव-वहन-शक्ति ही है। भ्रमरगीत -धारा युगभावना को वहन करने में पूर्णतः समर्थ रही है। भाव-वहन की यह शक्ति ही उसे जीवित एवम् गतिशील बनाए है।"[१]

प्रश्न उपस्थित होता है कि आखिर भ्रमरगीत की मूल अभिव्यंजना क्या है ? इस प्रश्न की गहराई में जाने पर ज्ञात होता है कि विवश नारी सबल पुरुष को वश में तो कर नहीं पाती केवल उलाहना एवम् उपालम्भ करके ही अपने चित्त की शांति पा लेने का उपक्रम करती है। पुरुष या नारी को त्याग देना एक बहुत ही सामान्य कार्य रहा है। पुरुष अपने कर्तव्य की दुहाई देकर प्रेम-परायणा, एकनिष्ठा नारी को त्याग कर अपनी राह पकड़ लेता है। चाहे लक्ष्मण-उर्मिला, हों, चाहे गौतम और गोपा हों सबमें यही दीख पड़ा है। ऐसा ही कृत्य कृष्ण के द्वारा भी हुआ है। लक्ष्मण के वियोग में केवल उर्मिला को आंसू बहाने पड़े थे, गौतम के चुपके से निकल जाने पर यशोधरा को बहुत ठेस पहुँची थी और उसे अपनी सखियों से यह कहते हुए पाया गया था -

" घर चोरी चोरी गए यही बड़ा आघात ।
सखि ! वे मुझसे कहकर जाते ।"

उपर्युक्त प्रसंगों में वियोग वह्नि में केवल कुछ स्वजनों को ही जलना पड़ा था। कृष्ण के प्रेम में सारी ब्रजभूमि ही विरह-ज्वाला में जल रही है। कृष्ण कह गए थे कि "आऊंगा" किन्तु नहीं आए। उनके वचन खाली पड़ गए। ब्रजभूमि की असंख्य गोपियां, ग्वालबाल, सखा, माता और पिता सभी आठ-आठ आंसू बहा रहे हैं। इन सबमें सर्वाधिक पीड़ित वे गोपांगनाएं हैं जिन्होंने कृष्ण-प्रेम में पति छोड़े, पुत्र छोड़े तथा लोक-लाज खोई। और अन्त में खो गए उनके प्राणाधार कृष्ण ! किससे कहें अपनी व्यथा-कथा। अतएव जब उद्धव का ब्रजागमन होता है तब गोपियों के हृदय से उपालम्भपूर्ण वाणी निःसृत होने लगती है। और वे

१- हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा- डा० स्नेहलता श्रीवास्तव, पृ० ५६८, (भारत प्रकाशन मंदिर-अलीगढ़)

उद्धव तथा कृष्ण सभी को खरी-खोटी सुनाने लगती हैं। कुब्जा को लेकर उनके मन में असूया भाव जागृत होता है। वे बड़ी दुर्गति में पड़ गई हैं, एक ओर कृष्ण-वियोग दूसरी ओर सौतिया डाह। एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा।

मूल रूप में रसालंब तत्व द्वारा निर्मित भ्रमरगीत काव्य अपनी अनेक विशेषताओं के कारण अत्यंत प्रसिद्ध रहा है। इसकी कुछ विशेषताओं पर यहां हम विचार करते हैं।

भ्रमरगीतों में प्रेम की सभी दशाओं का सम्यक् चित्रण हुआ है। विरहावस्था में नारी की मानसिक अवस्था का जैसा मनोवैज्ञानिक चित्रण यहां मिलता है वैसा अन्यत्र देखने में नहीं आता। मध्ययुग के भक्त कवियों ने भ्रमरगीत प्रसंग द्वारा दोहरा कार्य-सम्पादन किया। उन्होंने इन गीतों के द्वारा अपने सिद्धान्तों का पुरोवाचन किया तो दूसरी ओर भगवान की भक्ति-भावना का -कृष्ण की लीला का गान-गाकर अपने हृदय की भक्ति विषयक पिपासा को शांत किया। युग प्रवाह को दृष्टि में रखकर उन्होंने निर्गुण और सगुण की वस्तुतः तर्कमूलक व्याख्या करके सगुण पक्ष का समर्थन किया। और निर्गुण को दुरूह एवं दुस्साध्य करार दिया।----- "ताते सूर सगुण लीलापद गावै" इस पद में उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि देखी जा सकती है।

भ्रमरगीत प्रसंग इतना आकर्षक व संबेद्य रहा है कि यह एक युग विशेष अथवा एक कालखण्ड तक ही सीमित नहीं रहा। प्रत्येक युग के कवि ने इसे अपनाया और अपने युगानुरूप इसमें रंग भरे और रोचकता भरी। रीतिकाल के कवियों ने सवैया-घनाक्षरी छन्दों में इससे उक्ति-वैचित्र्य का कार्य किया। वाणी में वाक्-वैदग्ध्य भरा और अपनी अलंकार -प्रियता का इसके द्वारा प्रदर्शन किया। साथ ही कृष्ण प्रसंग की इन बहुचर्चित प्रेम-धारा में निमज्जन भी किया। युग बदला, नवयुग आया, राष्ट्रीय भावों और स्वातंत्र्य का शंखनाद सुनाई पड़ने लगा। कविवर

सत्यनारायण कविरत्न ने विदेशों में पड़े हुए स्वातंत्र्य सेनानियों, नारी-शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति आदि विषयों को अपने 'भ्रमरदूत' काव्य में स्थान दिया है। कृष्ण नहीं हैं अतएव ब्रज के ग्वालों का कौन नेतृत्व करे इस पर उनकी ये पंक्तियां द्रष्टव्य हैं -

"वा बिनु को ग्वालन को हित की बात सुझावै।
अरु स्वतंत्रता, समता, सह भ्रातृता सिखावै।।
यदपि सकल विधि ये सहत दारुण अत्याचार।
पै न कछु मुख सों कहत, कोरे बने गंवार।।
कोऊ अगुआ नहीं।।"

इन पंक्तियों में युगीन जीवन का संकेत मिलता है। नारियों की उच्छृंखलता पर 'कविरत्न' जी ने बड़ी बेलाग बात कही है -

अबकी गोपी मदभरी, अधर चढ़ै इतराय।
चार दिना की छोकरी, गई ऐसी गरबाय।।
जहां देखौ तहां।।

गोरे अंग्रेजों पर इनका व्यंग्य देखिए।-

"गोरी कौं गोरे लागत जग अति ही प्यारे।
मो कारी कौं कारे तुम नयननु के तारे।।
उनको तो संसार है, मो दुखिया को कौन।
अलिये कहा विचार है।।"

और अंत में 'कविरत्न' जी की ये पंक्तियां भी देखिए जिनमें उन्होंने प्रवासी भारतीयों की व्यथा का निर्देश किया है -

"जे तजि मातृभूमि सौं ममता, होत प्रवासी।
तिन्हैं विदेसी तंग करत दै विपदा खासी।।
नहिं आये - निरदय दई, आये-गौरव जाय।
सांप छछूंदर गति भई, मन ही मन अकुलाय।।
रहे सब के सबै।"

हरिऔध जी ने प्रमरगीत ७७०७७७ के माध्यम से विश्व मानवता, सेवा-नारायणता, त्याग तथा कर्तव्य निष्ठा का अनुपम चित्र अंकित किया है। हरिऔध द्वारा चित्रित राधा स्वार्थिनी नहीं है वरन् उसमें प्रिय की हितैषिणी भी है। उसमें नारी सुलभ दुर्बलता के कारण मानसिक द्वन्द्व अवश्य उत्पन्न होता है -

"प्यारे आवैं बु-बयन कहैं प्यार से मोद लेवैं।
हंसे बोलैं नयन, दुख को दूर मैं मोद मानूं ।।
ए भी हैं भाव मम उर के और ए भाव भी हैं।
प्यारे जीवैं जा लिप्त करें गेह चाहैं न आवैं ।।"
"गाती हूं विश्व प्रियतम नैं, विश्व में प्राणप्यारा।
ऐसा मैंने जातवनि को श्याम में है निहारा ।।"

हरिऔध तथा 'अनिरुद्ध' जी ने युग के अनुसार प्रमरगीत की प्राचीन परम्परा में परिवर्तन करके अपनी मौलिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। आज की आवश्यकतानुसार प्रमरगीत पद्धति से रचित काव्य में नवीन विचारों और भावों को भरा गया है। यह प्रमरगीत काव्य एक साथ विरह वात्सल्य एवं विरह शृंगार का प्रतीक है। विरह की समस्त दशाओं का इस काव्य में बड़ी कुशलता से चित्रण हुआ है। मुख्यत: सूरदास एवं नन्ददास के प्रमरगीतों में ये विशेषताएं पाई जाती हैं। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में स्पष्ट किया है कि प्रमरगीत काव्य में प्रकृति का चित्रण भी विरह निवेदन के प्रसंग में हुआ है। कहीं गोपियों को चांदनी काली लगती है और कहीं वे पपीहा से शिकायत करती हैं कि "तुम कत रटत हरे।" कहीं-कहीं पावस उन्हें गेरे रहती है और "कुंजै बैठत "कुन्जै बैरिन" बनकर उन्हें व्यथित करती हैं।

प्रमरगीत काव्य में नाटकीय तत्वों का भी समावेश देखा जा सकता है। इस विषय में सम्बंधित अध्याय में विचार किया गया है। प्रमरगीत काव्य का

नाटकीय तत्व बहुत ही रोचक एवम् श्लाघनीय हैं। नाट्यात्मकता के कारण भ्रमरगीत के पात्र कृष्ण, कुब्जा, उद्धव, नन्द, यशोदा और गोपियां हमारी आंखों के सामने सजीव रूप में उपस्थित होते हैं। भ्रमरगीतों में जो संगीतात्मकता है वह अत्यंत मनोमुग्धकारी तथा विदग्धजनों को आकर्षित कर लेने वाली है। आचार्य शुक्ल भ्रमरगीत को 'संगीत भूमि की' संज्ञा प्रदान करते हुए लिखते हैं -" अब हम उनकी संगीत भूमि में थोड़ा प्रवेश करते हैं जो भ्रमरगीत के नाम से प्रसिद्ध है और जिसमें वचन की भावप्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम प्रसूत न जाने कितनी अन्तर्वृत्तियों का उद्घाटन परम मनोहर है।"[१] यहां यह ज्ञातव्य है कि उपर्युक्त कथन महाकवि सूरदास तथा अन्य भक्त कवियों—हितहरिवंश तथा परमानन्ददास के भ्रमरगीत पर ही चरितार्थ होता है जो पद शैली में लिखा गया है। भ्रमरगीत का अवलम्ब ले अथवा भ्रमर का प्रसंग लेकर जिन कवियों ने काव्य-रचना की है उनके काव्य और इन भक्त कवियों के काव्य में बड़ा अन्तर है। यह अन्तर भ्रमरगीत की मूल चेतना के सन्दर्भ में और भी रेखांकित हो जाता है। यह बात दूसरी है कि काव्य समता के कारण विद्वानों ने भ्रमर से सम्बंधित जो कुछ भी लिखा गया है वह सब भ्रमरगीत है ऐसा मान लिया है।

गुजराती साहित्य में भ्रमरगीत को 'भ्रमरगीता' की संज्ञा दी गई है। कुछ कवियों ने 'रसिकगीता'(भीम), 'सरसगीता'(प्रीतमदास) तथा 'प्रेमरसगीता' (दयाराम) आदि नामों से भी अभिहित किया है। नरसिंह मेहता एवं शेणवराम ने गोपीसन्देश तथा कवि रघुनाथ ने 'उद्धव-सन्देश' रूप में भ्रमरगीत के प्रसंग का वर्णन किया है। 'उद्धव गोपी संवाद' नाम से कवि गिरधर ने तथा 'अोधवजी नी गरबो' नाम से कवि कल्याण जी ने भ्रमरगीत के अत्यंत सरस प्रसंग का अपने काव्य में निरूपण किया है। 'गीत' तथा 'गीता' का आशय पिछले पृष्ठों में स्पष्ट किया जा चुका है। गुजराती भ्रमरगीतकारों ने गोपियों की मनोदशा का तो चित्रण

१- भ्रमरगीतसार-आ० रामचन्द्र शुक्ल पृ० ५०

तन्मयतापूर्वक किया ही है, परन्तु यशोदा की व्यथा को भी उन्होंने बड़ी गहराई से परखा है और उसे वाणी दी है। कवि प्रेमानन्द का यह कथन अत्यन्त मार्मिक है -

"ज्यम कोयलानां बाळकने कौ वायस पाले ;
मोटा थाये उडी जेसे, पोताने माळे ।"

जैसे - कोयल के बच्चों को कौआ पालता है, और जब वे बड़े हो जाते हैं तो उड़ जाते हैं और अपना अलग घर बना लेते हैं। कोयल कौआ के इस सन्दर्भ के उल्लेख से ही विरह-व्यथिता यशोदा का बिम्ब साकार हो उठा है। देवकी अपने पुत्र कृष्ण की हर प्रकार से सेवा सुश्रूषा करती है - विविध प्रकार के व्यंजन बनाकर देती है किन्तु कृष्ण ठीक से भोजन नहीं करते। जिससे देवकी बहुत ही दुःखी हो जाती है और माता यशोदा को भी मथुरा में बुलाने का निश्चय करती है।-

"तेडावो जशोदाजीने, नंद-तणी जे नार्य रे,
पट पाथरी पाये पडुं ; लडु बहु मनुहार्य ;
जशोदा जाणशे रे ।"[१]

विरह-वात्सल्य के क्षेत्र में गुजराती के कवियों ने कुछ मार्मिक एवं नयी उद्भावनाएं की हैं। कहीं-कहीं यशोदा के चरित्र का अवमूल्यन भी कर दिया है -

शुं केहे जाणे देवकी, जेणे कीधो मारो पुत्र ? ?
परमेश्वर येने पूछशे, मारुं उजाड्युं घर-पूत्र ।"[२]

१- प्रेम-पचीसी : विश्वनाथ जानी-कवि ब्रह्मदेव कृत-प्रपरगीता अन्य कविगणनी वैष्णव गीताओ अने सदर गोपी संवादोना परिचय समेत : डा० मंजूलाल-मजमूदार तथा डा० विमनलाल म. जैद्य -पृ० ८६

२- वही, पृ० १४६

उपर्युक्त विवेचन से भ्रमरगीत काव्य की जो विशिष्टतायें दृष्टिगत हुई हैं उन्हें सारूप में यहां प्रस्तुत कर देना वांछनीय है -

भ्रमरगीत प्रेम की उदात्त भावभूमिका का काव्य है। इसमें विरह की समस्त अवस्थाओं का चित्रण हुआ है।

भ्रमरगीत काव्य में प्रेम-लक्षणा-भक्ति का सुन्दर निरूपण हुआ है। मध्यकालीन कवियों का विशेष दृष्टिकोण सगुण भक्ति की स्थापना का रहा है। निर्गुण निराकार की उपासना तद्युगीन समाज के लिए भक्त कवियों ने अनुपयुक्त पाया और दोनों रूपों में विवाद उपस्थित करके निर्गुण भक्ति पर सगुण भक्ति की विजय दिखलाकर भक्त कवियों ने अपने अभिप्रेत को प्रस्तुत किया। अपने सिद्धान्त और भक्ति निरूपण में सूरदास, नन्ददास जैसे कवियों ने गोपियों का उपयोग किया। विरह वात्सल्य के चित्रण में कवियों ने करुण का गहरा रंग मिला दिया है। भ्रमरगीत काव्य में गोपियों के द्वारा कवियों ने संसार की असारता को असत्य बतलाया है। भ्रमरगीत काव्य का उत्स श्रीमद्भागवत पुराण है किन्तु भागवतपुराण में निर्गुण-सगुण के विवाद का उल्लेख न होने पर भी सूरदास, नन्ददास, भीम, प्रेमानंद, दयाराम आदि कवियों ने अपने काव्य में उपस्थित कर दिया है। जगत सत्य है तो वह 'माया' भी श्रेयस्कर है जो कृष्ण से प्रीति करा दे, ऐसा भ्रमरगीत में अनेक स्थलों पर प्रतिपादित हुआ है।

भ्रमरगीत काव्य नारी हृदय की कोमलतम सरस एवं करुण भावनाओं के अभिव्यंजन का काव्य है जिसे मनोविज्ञान के आधार पर सूरदास, नन्ददास, हरिऔध, रत्नाकर, ब्रह्मदेव, प्रेमानन्द, दयाराम आदि कवियों ने बड़ी स्वाभाविकता से प्रस्तुत किया है। 'जननि मां सहचरि प्राण' नारी के इन विविध रूपों में से भ्रमरगीतकार कवियों ने प्रथम तीन का बहुत ही उत्कृष्ट चित्रण किया है। जननी देवकी कृष्ण

का दिन रात सुख देखती रहती है, प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा देना चाहती है फिर भी अपने लाल को उत्फुल्लमन देखकर बहुत दुःखी है। मां यशोदा के चित्रण में तो इन सखियों ने कोई कसर नहीं उठा रखी। नन्द के मथुरा से खाली हाथ लौटने पर यशोदा का यह कहना -" नंद ब्रज लीजै ठोंकि बजाय" उनकी व्यथा का ही परिचायक है। सखियों गोपियों को विरह का इतना अनुताप सहन करना पड़ा है कि उन्हें सारी प्रकृति ही श्रीकृष्ण के विरह में जलती दीख पड़ती है तथा " सदा रहत पावस ऋतु हमपै " आदि उक्तियों से उनकी विरह व्यथा का अनुमान सहज ही लग जाता है।

भ्रमरगीत काव्य वस्तुतः ग्राम्य और नागरिक संस्कृतियों के द्वन्द्व का काव्य प्रतीत होता है। जब भी कोई गांव छोड़कर नगर की डगर पकड़ता है तो गांववालों की पीड़ा सहज ही उमड़ पड़ती है। गांव की सहजता, अकृत्रिमता नगर में जाकर विलीन हो जाती है। जीवन आडंबरयुक्त हो जाता है। समस्याओं की उलझनें बढ़ जाती हैं और स्वभाव में एक अस्वाभाविक अंतर आ जाता है। ये सब तथ्य गोपियों की उक्तियों में देखे जा सकते हैं। गोचारण छोड़कर कृष्ण का मथुरा के राजकीय परिवेश में पहुंच जाना गोपी तथा गोपजनों को नहीं भाया। ग्वाल-बालों में एक हीन ग्रन्थि जागृत हुई। कृष्ण के प्रति उनका आक्रोश, उनकी उलाहना सब कुछ वाजिब है। अब गोपियां कृष्ण से स्वच्छंदता से नहीं मिल पायेंगी, रासलीला नहीं कर पायेंगी आदि कितनी ही बातें हैं जिन्हें सोच-सोचकर ब्रजवासी व्याकुल हो रहे हैं। प्रश्न यह नहीं है कि कृष्ण दूर चले गये हैं। प्रश्न यह है कि कृष्ण मथुरा नगर चले गये हैं और वह भी राजपुरुष बनकर। एक तो वैसे ही गांव व नगर की संस्कृति में अन्तर, परिवेश में अन्तर और ऊपर से कृष्ण अब वैभवशाली हो गये हैं। राजाचार सभी कुछ उनके चारों ओर है, इससे वे और भी दूर हो गई हैं।

भ्रमरगीतकार कवियों ने अपने युग के प्रति दायित्व का निर्वाह किया है। समाज के रीति-रस्म, व्रत, उपवास, शील, सौजन्य एवं मर्यादा का चित्रण भी उन्होंने किया है। उद्धव के ब्रजागमन के अवसर पर रथारूढ़ उद्धव को आते देखकर नन्द जी स्वयं उनके स्वागत के लिए आगे बढ़कर आ जाते हैं :- "आरघ देत भीतर तिहीं लिन्हों" में आतिथ्य भावना द्रष्टव्य है। इस आतिथ्य भावना को जो कि भारतीय संस्कृति का प्रमुख लक्षण है प्राय: सभी भ्रमरगीतकारों ने न्यूनाधिक मात्रा में चित्रण किया है।

भ्रमरगीत काव्य की इन विशेषताओं के होते हुए इसकी कुछ अपनी न्यूनताएं भी रही हैं। यद्यपि परिमाण में अत्यल्प होने के कारण इनका कोई विशेष महत्व नहीं प्रतीत होता। तथापि उन पर यहां विचार कर लेना समीचीन है। भ्रमरगीत काव्य के रचयिताओं ने प्राय: विषय का पिष्टपेषण ही किया है। एक ही भाव अथवा कथ्य को अनेक कवियों ने अनेक स्थलों पर चित्रित किया है, जिससे भाव वैविध्य की विस्तृति नहीं हो पाई है।

भ्रमरगीत परंपरा अपने स्थान में बड़ी ही समृद्ध एवं कृष्ण चरित्र का अत्यंत उज्ज्वल चरित्र प्रस्तुत करने वाली मार्मिक काव्य परम्परा है। अतएव, प्रतिभा सम्पन्न भक्त कवियों के अतिरिक्त अन्य कवियों ने भी इस प्रसंग को लिया और इसका चित्रण करना एक 'फैशन' सा मान लिया। परिणाम यह हुआ कि भ्रमरगीत की मूल संचेतना से उनका काव्य हट गया। और भ्रमरगीत कृष्ण कथा का एक मार्मिक प्रसंग ही न रहा वरन् एक काव्य विधा अथवा काव्य सरणी भी बन गया। स्फुट, कवित्त,सवैयों एवं दोहों में भी इसकी रचना होने लगी और इसकी संगीतात्मकता धीरे धीरे विलुप्त हो गई। वस्तुत: ये भ्रमरगीत काव्य की न्यूनताएं न होकर भ्रमरगीतकारों की ही हैं। अन्त में हिन्दी तथा गुजराती भ्रमरगीत काव्य

को सम एवं विषम रेखाएं क्या हैं इन पर भी संकेत कर देना आवश्यक है।

प्रेम-लक्षणा-भक्ति का दोनों भाषाओं के काव्यों में समानरूप से चित्रण मिलता है। विप्रलंभ शृंगार तथा विरह वात्सल्य दोनों भाषाओं के काव्य में मार्मिक रूप में मिलता है। दोनों भाषाओं के भ्रमरगीत काव्य में सगुण-निर्गुण विवाद चर्चित हुआ है। निर्गुण पर सगुण की विजय का उद्घोष दोनों भाषाओं के कवियों ने किया है। दोनों भाषाओं के कवियों ने तद्युगीन सामाजिक मान्यताओं का भी वर्णन किया है। साम्य के इन तत्वों के होते हुए भी दोनों भाषाओं के भ्रमरगीत काव्य में कुछ वैषम्य भी प्राप्त होता है। हिन्दी के भ्रमरगीतकार कवियों ने यशोदा और नन्द की अपेक्षा गोपियों का अधिक चित्रण किया है जबकि गुजराती के भ्रमरगीतकार कवियों ने यशोदा, नन्द, देवकी, वसुदेव सबका वैसा ही चित्रण किया है जैसा गोपियों का। गुजराती के अधिकांश भ्रमरगीतकार कवि विशुद्ध रूप से प्रेम-लक्षणा-भक्ति के गायक रहे हैं और उन्होंने भ्रमरगीत की मूल चेतना को कभी नहीं छोड़ा। एक प्रकार से वे परंपराबद्ध अधिक हैं। जबकि हिन्दी के भ्रमरगीतकार कवि युगानुरूप अधिक रहे हैं। उन्होंने आधुनिक युग में भ्रमरगीत काव्यों की रचना की और इस पौराणिक आख्यान के माध्यम से अपने युग के जन-जीवन का भी उल्लेख किया। गुजराती के भ्रमरगीतकार कवियों ने अपनी रचनाओं में भ्रमरगीत के माहात्म्य तथा ग्रंथ पाठ के फल आदि की भी चर्चा कर दी है। जबकि हिन्दी के भ्रमरगीतकार कवियों में से कुछ ही ने माहात्म्य वर्णन किया है। हिन्दी में 'भ्रमरगीत' शब्द है जबकि गुजराती में 'भ्रमरगीता' 'रसिकगीता' 'सरसगीता' 'प्रेमरसगीता' आदि शब्द भी मिलते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओं के भ्रमरगीत काव्य में जो असमानताएं मिलती हैं वे मूलचेतना के साम्य पर तनिक भी प्रभाव नहीं डालतीं और ये विषमताएं मात्र बाह्य भेद सी ही प्रतीत होती हैं। आंतरिक साम्य दोनों भ्रमरगीत काव्यों में प्रचुर परिमाण में है।

समग्र विवेचन के उपरान्त हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी तथा गुजराती भ्रमरगीत काव्य अपनी भाव-संपत्ति तथा कलात्मक सौष्ठव के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हिन्दी तथा गुजराती दोनों भाषाओं का यह अप्रतिम काव्य अपनी मूल चेतना में एक है। उक्त काव्य जहां हमें आध्यात्मिक रस की उपलब्धि करा देता है वहीं हमें गोपी-उद्धव संवाद, यशोदा का विरह निवेदन आदि प्रसंगों में लौकिक तथा पारिवारिक जीवन की रसप्रद अनुभूति भी करा देता है। प्रिय-वियोग तथा पुत्र-वियोग कितना मार्मिक एवं दारुण होता है इसकी प्रतीति हमें भ्रमरगीत प्रसंग से बड़ी तीव्रता के साथ हो जाती है। भ्रमरगीत काव्य पौराणिक एवं मध्यकालीन होते हुए भी युग-युग का काव्य है, यह हमारे मन-प्राणों का राग है, इसमें हम अपनी आत्मा का संगीत सुन पाते हैं। महान् नट का प्रतीक नाटक इसमें हमें दीख पड़ता है। दोनों भाषाओं का यह काव्य पठनीय, मननीय एवं श्लाघ्य है।

00000000000
000000000
0000000
00000
000
0

-: सहायक ग्रन्थों की सूची :-

हिन्दी-ग्रन्थ :

अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय --- डा० दीनदयालु गुप्त

अष्टछाप परिचय --- प्रभुदयाल मीतल

अष्टछाप के कवि नन्ददास --- डा० कृष्णदेव झारी

आलम केलि --- सं० उमाशंकर मेहता

कृष्ण काव्य में भ्रमरगीत --- डा० श्यामसुन्दरलाल दीक्षित

काव्य-दर्पण --- पं० रामदहिन मिश्र

कृष्णायन --- द्वारिकाप्रसाद मिश्र

कृष्ण-गीतावली --- तुलसीदास

काव्य-निर्णय --- भिखारीदास

कविश्री माला --- अनन्तराय रावल

साकेत --- मैथिलीशरण गुप्त

नाथ-संप्रदाय --- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

नागरीदास ग्रंथावली --- सं० डा० किशोरीलाल गुप्त

नवरस तरंग --- सं० कृष्णबिहारी मिश्र

पद्माकर ग्रन्थावली --- सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र

प्रागनकृत भंवरगीत --- सं० हरिमोहन मालवीय

प्रिय-प्रवास --- हरिऔध

पुराण-विमर्श --- बलदेव उपाध्याय

परमानन्द सागर --- पं० डा० गोवर्धननाथ शुक्ल

भंवरगीत और रासपंचाध्यायी --- डा० उदयनारायण तिवारी

भारतीय दर्शन --- बलदेव उपाध्याय

मध्यकालीन हिन्दी काव्य में भारतीय संस्कृति --- डा० मदनगोपाल गुप्त

भ्रमरगीत का काव्य वैभव --- डा० मनमोहन गौतम

भ्रमरगीत सार --- पं० रामचन्द्र शुक्ल

भंवरगीत --- नन्ददास

मैथिल कोकिल विद्यापति --- बाबू ब्रजनन्दन सहाय

महादेवी का विवेचनात्मक गद्य --- महादेवी वर्मा

रहीम रत्नावली --- डा० मायाशंकर याज्ञिक

रसखान कवितावली --- प्र० नवलकिशोर प्रेस, मथुरा

रस सिद्धान्त --- डा० नगेन्द्र

श्याम सन्देश --- श्यामसुन्दरलाल दीक्षित

सूरसागर १,२ --- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

सूर और उनका साहित्य --- डा० हरवंशलाल शर्मा

सेनापति कृत कवित्त रत्नाकर --- सं० उमाशंकर शुक्ल

सूर साहित्य --- हजारीप्रसाद द्विवेदी

संस्कृति के चार अध्याय --- रामधारीसिंह 'दिनकर'

हिन्दी साहित्य का इतिहास --- रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी काव्य विमर्श --- डा० गुलाबराय

हिन्दी भाषा और साहित्य --- डा० श्यामसुन्दर दास

हिन्दी साहित्य --- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

हिन्दी का समस्यापूर्ति काव्य --- डा० दयाशंकर शुक्ल

हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास --- डा० रामकुमार वर्मा

हिन्दी साहित्य की भूमिका --- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

हिन्दी साहित्य में कृष्ण --- डा० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत परम्परा --- डॉ० सरला शुक्ल

हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा -- डा० स्नेहलता श्रीवास्तव

हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास --- डा० गुलाबराय

हिन्दी साहित्य कोष भाग-१,२ --- सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा

हिन्दी साहित्य का अतीत --- विश्वनाथप्रसाद मिश्र

हिन्दी नाटक उद्भव और विकास --- डा० दशरथ ओझा

हिन्दी साहित्य में राधा --- डा० द्वारकाप्रसाद मीखल

गुजराती ग्रन्थ :

आपणो धर्म --- आनन्दशंकर ध्रुव

अर्वाचीन कविता --- सुन्दरम्

कवि-चरित्र --- केशवराम शास्त्री

कृष्ण -चरित्र --- गिरधर

कंठ चातक नो --- मुकुंदभाई पाराशर्य

गुजराती साहित्य --- अनन्तराय रावल

गुजराती साहित्यना स्वरूपो --- प्रो० मंजुलाल मजमूदार

गुजराती साहित्यनी विकास रेखा --- विजयराम वैद्य

गुजराती हाथ प्रतोनी संकलित यादी --- सं० केशवराम काशीराम शास्त्री

गुजराती साहित्यनी विकास रेखा --- धीरूभाई ठाकर

गुजराती साहित्यना मार्गसूचक स्तंभो --- कृष्णलाल - मो० झवेरी

दशम् स्कंध --- प्रेमानन्द

प्राचीन फागु संग्रह --- सं० भोगीलाल सांडेसरा

प्रेम-पचीसी --- प्रेमानन्द

प्रीतमरायनी वाणी --- वस्तु साहित्य प्रकाशन, अहमदाबाद।

प्रेम के योग --- शिवानन्द सरस्वती

भालणकृत दशम् स्कंध --- सं० ह० र० कांटावाला

मीराबाई एक मनन --- डा० मंजूलाल मजमूदार

मध्यकालीन साहित्य प्रवाह	----	कन्हैयालाल मुंशी
राधिका	---	देवजी रा० मोढा
वैष्णव गीताओ	---	सं० डा० मंजूलाल तथा चिमनलाल वैद्य
बृहद् काव्य दोहन	---	इच्छाराम सूर्यराम देशाई
ब्रह्मानन्द काव्य	---	सं० रावसाहेब करमशी दामजी तथा मोतीलाल त्रिभोवनदास फडजदार
श्रीकृष्णलीला काव्य	---	कम्बालाल बु० शानी
श्री विक्रमराय जी हवेली शताब्दी महोत्सव--- स्मारक ग्रन्थ----------		सं० श्री मुगटलाल बल्लभदास पारीख
साहित्यनो विश्वकोष	---	सं० विजयराम वैद्य
हरि संहिता	---	न्हानालाल दलपतराय कवि

संस्कृत ग्रन्थ :

उज्ज्वल नीलमणि	---	रूप गोस्वामी
गर्ग संहिता	---	गर्गाचार्य
गीत गोविन्द	---	जयदेव
तत्वदीप निबन्ध	---	महाप्रभु बल्लभाचार्य
ब्रह्मपुराण		
ब्रह्मवैवर्त पुराण		
ब्रह्मसूत्र	---	आचार्य बल्लभ

भागवत पुराण	---	
भागवद्गीता	---	
विष्णुपुराण	---	
स्कंद पुराण	---	
साहित्य दर्पण	---	विश्वनाथ कविराज

oooooooo

अंग्रेजी ग्रन्थ :

ए हिस्ट्री आफ इण्डियन फिलास्फी	---	डा० सुरेन्द्रनाथ दास
क्लासीकल पोएट्स आफ गुजरात	---	गोवर्धनराम
इयरली हिस्ट्री आफ द वैष्णवीजम	---	डा०. राय चौधरी
एसे आन गीता	---	अरविन्दो
गुजरात एण्ड इट्स लिटरेचर	---	के० एम० मुन्शी
हेन्ड बुक आफ पोयटिक्स	---	एफ० बी० गुम्मर
इण्डियन फिलास्फी	---	डा० राधाकृष्णन्
मेडिवेल इण्डिया	---	डा० महरीन्द्रनाद
द पुष्टि मार्ग	---	लल्लूभाई पी० पारीख
वैदिक लिटरेचर	---	आर० सी० मजूमदार

oooooo

पत्र-पत्रिकाएं :

कल्याण (हिन्दी)	---	श्री कृष्णांक
कल्पना (हिन्दी)	---	
कल्याण (हिन्दी)	---	भागवत विशेषांक
अनुग्रह (गुजराती)	---	
स्वाध्याय : (गुजराती)	---	
साहित्य सन्देश (हिन्दी)	---	
सरस्वती : (हिन्दी)	----	

oooooooooooo